REVIEW OF RESEARCH

# "जिद्दू कृष्णमूर्ति के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन"

सत्यप्रकाश तिवारी[१] , डॉ. रतन कुमार भारद्वाज[२]

[१]शोधकर्त्ता, शिक्षा , राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
[२] आचार्य , संजय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय लाल कोठी,स्कीम, जयपुर.

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 8 | MAY - 2019

**सारांश**

इस शोध-पत्र में जिद्दू कृष्णमूर्ति के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विस्तृत चर्चा की गई है। जिद्दू कृष्णमूर्ति अद्वितीय प्रतिभा सम्पन्न दार्शनिक थे, जिनका समग्र जीवन सत्य के लिए, आत्मबोध के लिए, मुक्ति के लिए, मानव सृजन और कल्याण के लिए समर्पित था। उनकी समग्र जीवन दृष्टि, उनका परिदर्शन और सम्यक शिक्षा भारत ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व के लिए प्रासांगिक, प्रायोगिक, महत्वपूर्ण, सार्थक,अनुकरणीय और उपादेय है। जिनके सम्बन्ध में इस शोध-पत्र में जिद्दू कृष्णमूर्ति के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर जन्म से लेकर थियोसोफिकल सोसाइटी से जुड़ने तथा अपने शेष जीवन को बड़े और छोटे समूहों और व्यक्तियों से चर्चा करते हुए, दुनियां की यात्रा करते हुए बिताया। उन्होंने अनेक किताबे लिखी, उनकी कई बातें और चर्चाए भी प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित हुई हैं। उनके भारत, ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमेरिका में शिक्षा संस्थान आज भी उनके समर्थको द्वारा संचालित किये जाते हैं। जो उनके विचारों को मूर्तरूप देतें हैं। जे. कृष्णमूर्ति जी बीसवीं शताब्दी में विश्वभर में विख्यात हुए प्रसिद्ध मानवतावादी दार्शनिक थे। तथा शिक्षा के क्षेत्र में उनका योगदान बहुत महत्वपूर्ण है।

**प्रस्तावना –**

हमारी भारत भूमि के गर्भ में अमूल्य रत्न समाये हुए है। रत्न गर्भाभूमि पर समय-समय पर महान रत्न पैदा हुए है, जिन्होंने मानव को दिशा प्रदान की है। इन्हीं महान तेजस्वी रत्नों में से एक रत्न जिद्दू कृष्णमूर्ति जी है। ऐसी महान आत्मा के जन्म पर प्रकृति स्वयं आनन्दित होती है। जे. कृष्णमूर्ति जी बीसवीं शताब्दी में विश्वभर में विख्यात हुए एक महान संत, भारतीय दार्शनिक, वक्ता और लेखक थे। अपने विलक्षण व्यक्तित्व के कारण सबके आदरणीय एक महामानव, उम्र के नब्बे वर्ष तक-यानी जीवन के अन्त तक वे बाल के जैसे निष्पाप, सरल, खुले और सहज रहे। उन्हें लगता बच्चों जैसे प्रौढ़ लोग भी सहज और निष्कपट होंगे तो दुनिया कितनी सुन्दर बनेगी। इन्हीं गुणों के कारण उनके जीवन में विश्व का रहस्य खुल गया और इसी वजह से वे केवल सारे मानवों के ही मित्र नहीं, बल्कि सभी प्राणियों, समूची सृष्टि के लिए वे अपने बने।

जे. कृष्णमूर्ति जी का जीवन आज भी सफलता की सर्वोच्च चोटी पर पहुँच कर चारों ओर ज्ञान का प्रचार प्रसार कर रहा है। उनकी समग्र जीवन दृष्टि, उनका परिदर्शन और सम्यक शिक्षा भारतीय जनमानस के लिये नवीन पथ प्रदर्शित करता है। जो भारत ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व के लिए प्रासांगिक, प्रायोगिक, महत्वपूर्ण, सार्थक और उपादेय है। जिनके सम्बन्ध में यह अध्ययन प्रस्तुत है।

**अध्ययन का महत्त्व :-** वर्तमान शिक्षा का उद्देश्य बहुत ही औपचारिक है जिसमें शिक्षा शुद्ध

कृत्रिम विधियों से आगे बढ़ती है और पुस्तकीय ज्ञान को रटाकर शिक्षार्थी को पंडित बना देना जिसका लक्ष्य है। जबकि शिक्षा का उद्देश्य केवल कतिपय विषयों की जानकारी देना मात्र नहीं है। शिक्षा के द्वारा बालक का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक विकास इस प्रकार से होना चाहिये कि वह अपने पैरों पर खड़ा होकर समाज और राष्ट्र के प्रति अपने उत्तरदायित्व का पूरी तरह निर्वाह कर सके। विद्यार्थी के व्यक्तित्व के निर्माण में आदर्श व्यक्तित्व के अनुशरण का बहुत महत्वपूर्ण योगदान होता है जिसका अनुशरण करने से ही बालक का व्यक्तित्व सर्वोच्च शिखर पर पहुँच सकता है किसी ने ठीक ही कहा है कि इतिहास वही बनाते हैं जिनको इतिहास का ज्ञान हो।

उपरोक्त समस्त बातों का गम्भीरतापूर्वक चिंतन करने के उपरांत शोधार्थी के मस्तिष्क में यह विचार उत्पन्न हुआ कि जे. कृष्णमूर्ति जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन शिक्षा के क्षेत्र में बहुत महत्वपूर्ण तथा शिक्षा को एक नई दिशा देने वाला कार्य होगा। जे. कृष्णमूर्ति जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन शिक्षा को भारतीय दार्शनिक विचारधारा एवं आध्यामिक विरासत से सम्बद्ध करने का सार्थक प्रयास है।

## अध्ययन का औचित्यः-

प्रस्तुत शोध अध्ययन जिद्दू कृष्णमूर्ति के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर आधाारित है। जिद्दू कृष्णमूर्ति स्वयं एक अद्वितीय महामानव थे, जिन्हें विश्व के अनेक दार्शनिकों, लेखकों, विद्वानों, शिक्षकों, धार्मिक और आध्यात्मिक व्यक्तियों ने **'विश्व शिक्षक'** का सम्मान दिया है। मानव के समग्र प्रस्फुटन और सम्यक शिक्षा के लिये जिद्दू कृष्णमूर्ति आजीवन समर्पित रहे। इसलिये भारत सहित विश्व के अनेक देशों में उन्होंने स्वतन्त्र शिक्षण संस्थाएँ निर्मित करने की प्रेरणा दी। जिद्दू कृष्णमूर्ति युवकों की एक ऐसी पीढ़ी विकसित करना चाहते थे जो जीवन के मौलिक प्रश्नों को उठाने, समझने और समाधान करने की क्षमता प्राप्त कर सकें। इसलिए उन्होंने शिक्षकों और विद्यार्थियों दोनों का आह्वान किया है।

जिद्दू कृष्णमूर्ति जी ने विश्व की प्रत्येक चुनौती और समस्या से पलायन करने के बजाय उनका सामना करना, समझना और समाधान खोजना सिखाया है। इस प्रकार शोधकर्ता ने जिद्दू कृष्णमूर्ति के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन किया है। जो सर्वथा अद्वितीय, नवीन, सार्थक और उपादेय हैं।

**समस्या कथन :-** "जिद्दू कृष्णमूर्ति के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन"

## अध्ययन के उद्देश्य :-

जिद्दू कृष्णमूर्ति के व्यक्तित्व का अध्ययन करना।
जिद्दू कृष्णमूर्ति के कृतित्व का अध्ययन करना।

**शोध विधि :-** प्रस्तुत शोध कार्य में शोध का स्वरूप वर्णनात्मक रखा गया है। तथा शोध की विधि विषय वस्तु विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया है।

## अध्ययन का परिसीमन :-

प्रस्तुत अध्ययन की कुछ सीमायें भी है जो कि निम्नलिखित है-

1. इस अध्ययन को जे. कृष्णमूर्ति के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से सम्बन्धित साहित्य एवं पत्र-पत्रिकाओं तक ही सीमित रखा गया है।

## जे. कृष्णमूर्ति का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

**जे. कृष्णमूर्ति का जीवन परिचय :-** जे. कृष्णमूर्ति जी बीसवीं शताब्दी में विश्वभर में विख्यात हुए एक महान संत थे, जिनका जन्म दक्षिण भारत में आन्ध्र प्रदेश के मदनपल्ली गांव में हुआ। इनके दादा गुरूमूर्ति उच्चकोटि के ज्योतिषी,भविष्यवक्ता तथा वेद-वेदांगो के जानकार थे। पिता नारायणय्या

ईस्ट इंडिया कम्पनी में राजस्व कर्मचारी थे। एवं माता संजीवम्मा कृष्ण की उपासक धर्मनिष्ठ गृहिणी थी। कृष्ण की तरह ये भी अपनी माँ की आठवीं संतान थे। उम्र के नब्बे वर्ष तक-यानी जीवन के अन्त तक वे बाल के जैसे निष्पाप, सरल, खुले और सहज अपने विलक्षण व्यक्तित्व के कारण सबके आदरणीय एवं आदर्श रहे। माँ के अवसान के बाद अपने परिवार के साथ कृष्णा भी अड़यार में रहने आया जहां वे थियोसोफिकल सोसाइटी से जुड़े।

कृष्णमूर्ति का स्वतंत्र व्यक्तित्व 1922 के बाद प्रकट होने लगा। जो प्रज्ञा अब तक छिपी रही थी, वह सभा-सम्मेलनों में और उसके भाषणों में व्यक्त होने लगी। हजारों अनुयायियों के नेता होने से उन्हें अब जिम्मेदारी अधिक महसूस होने लगी। पहले से ही उन्हें समारोहों में बाहरी तामझाम, चमकीले आड़म्बर आदि अप्रिय लगते थे। अपने अन्तरंग में अब सत्य की झाँकी पाने से वह आत्मविश्वास से उपदेश करने लगे। जीवन की एकता में उनका 'अहं' अब धुल गया था, उनकी शक्तियाँ अब उनकी नहीं रही, सारे विश्व की हो गयी थीं। सत्य दर्शन का उनका अनुभव, आनन्द अब कविताओं में भी व्यक्त होने लगा।

1929 में डॉ० एनी बेसेण्ट व 3000 स्टार सदस्यों की उपस्थिति में 18 वर्षों से स्थापित 'आर्डर आफ द स्टार इन द ईस्ट' को आपने भंग कर दिया जिससे हजारों-हजार लोग मर्माहत हुये। इस अवसर पर उन्होंने कहा- ''मैं दृढ़तापूर्वक कहता हूँ कि सत्य एक पंथहीन मार्ग है और आप किसी भी मार्ग से किसी धर्म या पंथ से उसके निकट नहीं पहुंच सकते। अब से कोई भी मेरा शिष्य नहीं। कोई भी अन्य व्यक्ति आपको स्वतंत्र नहीं कर सकता। सर्वप्रथम यदि आप इस बात को समझ लेते हैं तो आप देख सकेंगें कि कोई भी विश्वास या मान्यता संगठित करना कितना असम्भव है। विश्वास एक अत्यन्त व्यक्तिगत चीज है, उसको आप संगठित रूप नहीं दे सकते। यदि आप उसका संगठन करते हैं तो वह मृत हो जाता है, जो दूसरों पर लादा जाता है।"[1]

इसके पश्चात कृष्णमूर्ति जी ने अपने कार्य के लिए दान में मिली जमीन-जायदाद दाताओं को वापस कर दी और 1930 में थिओसोफिकल सोसायटी को त्याग कर अकेले ही सत्य की खोज और मानवता का दुःख-दर्द दूर करने निकल पड़े। अपने अनुयायियों से उन्होंने कहा था ''मैं आपको कोई शरबत पिलाकर सत्य का साक्षात्कार करा दूँगा, ऐसा आप मानते हैं, लेकिन यह भ्रम है। ऐसा कभी नहीं होगा।'' परन्तु एक बात का अहसास उन्हें प्रारम्भ से अन्त तक नित्य रहा। कि उनका जीवन धरती के मानवों की आध्यात्मिक भूख जगाने के लिए हर एक को अपना 'मैं' मिटाने की प्रेरणा देने के लिए हैं, और इस दिशा में मार्गदर्शन देने के लिए है।

जे० कृष्णमूर्ति महान क्रान्तिदर्शी, जागरूक, विलक्षण, सत्यान्वेषी व्यक्तित्व के धनी थे। उनकी वाणी में अद्भुत आकर्षण, अपूर्व मधुरिमा व सरसता थी। जिससे हर सुनने वाला उनसे प्रभावित ही नहीं होता था वरन अपने आपको उन पर न्यौछावर करने को आतुर हो उठता था तथा उसके अन्दर एक क्रान्तिकारी नवीन आन्दोलन जाग उठता था। हर वर्ग, जाति, उम्र, धर्म के लोग उनके प्रशान्ता और अगाध करूणा से आप ही आप खींचे चले आते थे। पीड़ायुक्त आहत मना व्यक्ति को स्वस्थ एवं उल्लासयुक्त कर देने में आपका कोई सानी नहीं था।

उन्होंने अपना शेष जीवन बड़े और छोटे समूहों और व्यक्तियों से चर्चा करते हुए, दुनिया की यात्रा करते हुए बिताया। उन्होंने कई किताबें लिखी, उनमें 'द फर्स्ट एण्ड लास्ट फ्रीडम', 'द ओनली रिवोल्यूशन' और 'कृष्णमूर्ति की नोटबुक' मुख्य हैं। उनकी कई बातें और चर्चाए भी प्रकाशित हुई हैं। उनकी आखिरी सार्वजनिक वार्ता मद्रास, भारत में थी। फरवरी 1986 में कैलिफोर्नियां के ओजई में पैंक्रियाटिक कैंसर से उनका देहावसान हो गया। उनके द्वारा स्थापित भारत, ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमेरिका में शिक्षा संस्थान आज भी उनके समर्थको द्वारा संचालित किये जाते हैं। जो उनके विचारों को मूर्तरूप देते हैं।

[1] Annie Besant, Talk in Viena, Sep. 2, 1927 (retranslated into English), Besant states her ideas about the world Teacher in the detail in two articles in the Herald of the Star. The Order of the Star in the east, 3.1912, and World Teacher, 1.1913

नवम्बर 1985 में कृष्णमूर्ति अन्तिम बार भारत आये थे। 17 फरवरी 1986 को लगभग 91 वर्ष की अवस्था में कैलिफोर्निया स्थित ओहाई घाटी के पाइन काटेज में निद्रावस्था में ही उन्होंने इस नश्वर शरीर को त्याग दिया। कृष्णमूर्ति जी आज यहाँ नहीं हैं, किन्तु अपनी नवदूरदृष्टिता, सामाजिक क्रान्तिदर्शिता, वैचारिकी तथा विलक्षण शैक्षिक दर्शन के कारण आज भी मानवता का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं।

**जे. कृष्णमूर्ति के व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति करते हुए विख्यात विचारक रोहित मेहता का कहना है कि " जे. कृष्णमूर्ति जी वर्तमान समय में एक मौलिक एवं क्रान्तिकारी विचारक है। उन्होंने नवीन दर्शन का निर्माण किया। उनके दर्शन की एक विशिष्टता है, चुनाव रहित सजग चेतना।"[२] आल्डस हक्सले का उनके विषय में कहना है कि "जे. कृष्णमूर्ति को सुनना बुद्ध को सुनने सरीखा है- ऐसी शक्ति, ऐसा अंतरस्थ प्रामाण्य।" जे.कृष्णमूर्ति के महात्मय का वर्णन करते हुए भारत के पूर्व राष्ट्रपति आर.वेंकणरमण कहते है कि- "वह मानो हमसे हमारा ही परिचय करा देते हैं।" अमरीकी लेखक खलील जिब्रान कृष्णमूर्ति के विषय में कहते हैं कि- "जब उन्होंने कमरे में प्रवेश किया, मैंने स्वयं से कहा : निश्चित ही, प्रेम के देवता का आगमन हुआ है।" अमरीकी विद्वान हेनरी मिलर कृष्णमूर्ति के व्यक्तित्व के विषय में कहते हैं- "उन सा और कोई नहीं जिससे मिलना मैं सौभाग्य मानता।" ऐसे अद्भुत महामानव थे जिद्दू कृष्णमूर्ति।**

## शिक्षा के क्षेत्र में जे. कृष्णमूर्ति जी का योगदान

जे. कृष्णमूर्ति जी ने अनेक पुस्तकों की रचनाएँ की है जिनमें शिक्षा संवाद, शिक्षा क्या है?, सुखी वही जो कुछ नहीं, ज्ञात से मुक्ति, ध्यान, शिक्षा और जीवन का महत्व , स्वतंत्रता, उत्तरदायित्व एवं अनुशासन, विज्ञान एवं सृजनशीलता, युद्ध और शान्ति, मानवता का भविष्य, मृत्यु एवं उसके बाद गरुड़ की उड़ान, संस्कृति के प्रश्न, प्रेम स्वयं से एक संलाप, ध्यान में मन, जीवन की पुस्तक, विज्ञान एवं सृजनशीलता, युद्ध और शान्ति, मानवता का भविष्य, ईश्वर क्या है?, जीवन भाष्य, जीविका का प्रश्न, प्रथम तथा अन्तिम मुक्ति,, जे. कृष्णमूर्ति नोट्स आदि प्रमुख है।

जे. कृष्णमूर्ति जी की पुस्तक "शिक्षा और जीवन का महत्व" 1953 जिसमें शिक्षा के प्रति जागरुकता एवं बालकों की शिक्षा पर विशेष महत्व दिया गया है। दूसरी पुस्तक "प्रथम एवं अन्तिम मुक्ति" जिसमें व्यक्ति एवं समाज, स्वयं ज्ञान, भय से मुक्ति, हमारी समस्याओं का कैसे समाधान हो? तथा विभिन्न समस्याओं को लेकर प्रश्नोत्तर क्रम में वर्णन किया गया है।

जे. कृष्णमूर्ति जी की शिक्षाओं को, उनकी अवधारणाओं को अच्छे ढंग से उनकी पुस्तकों में विश्लेषित किया गया है।

कृष्णमूर्ति की रचनाओं में उनके विचारों का प्रफुस्टन है। इनके मूल ग्रंथ एवं व्याख्यान अंग्रेजी भाषा में हैं जिनमें से अनेक के अनुवाद अनेक भाषाओं में हो चुके हैं। हिन्दी के अतिरिक्त गुजराती, मराठी, बंगाली, तेलगू और मलयालम आदि भाषाओं में इनके अनेक ग्रंथो के अनुवाद उपलब्ध हैं।

जे. कृष्णमूर्ति जी ने पुस्तकों की रचना के साथ ही विश्व में अनेक स्थानों पर विद्यालयों की स्थापना कर अपने विचारों को मूर्त रुप देने का सार्थक प्रयास किया है ये विद्यालय शिक्षा जगत में अपनी पहचान उत्कृष्ट विद्यालय के रूप में प्रदर्शित कर रहे हैं इन विद्यालयों की स्थापना प्रकृति के सुरम्य वातावरण में की गई है। ये विद्यालय आवासीय विद्यालय के रूप में आज भी प्रतिष्ठित है। इन विद्यालयों में ओक ग्रोव स्कूल ओजाय कैलीफोर्निया, ब्रोक वुड पार्क एजुकेशन सेन्टर हैम्पशायर इंग्लैंड, आदि विश्व में प्रतिष्ठित है। भारत में श्रृषि वेली एजुकेशन सेन्टर चित्तूर आन्ध्रप्रदेश, काजगल एजूकेशन एण्ड एनवायरमेण्टल प्रोग्राम चित्तूर आन्ध्रप्रदेश, दि स्कूल के . एफ . आई. दामोदर गार्डन बेसेण्ट एवेन्यू चेन्नई, पाठशाला स्कूल इलमीचमपेट-वालीपुरम कांचीपुरम तमिलनाडु, दि वैली स्कूल बैंगलुरु कर्नाटक, उत्तरकाशी एजुकेशन सेन्टर, राजघाट बेसेंट स्कूल वाराणसी, साहियाद्रि कृष्णमूर्ति स्कूल स्टडी सेन्टर तिवाई हिल्ल राजगुरूनगर पुणे महाराष्ट्र, बालआनन्द स्कूल आकाश दीप २८ डांगरेसी रोड मुम्बई,

[2] Education and the Significance of life, p.- 50, see also Mary Lutyens, Life and Death, p.- 177

वसंता कालेज फॉर वूमेन राजघाट वाराणसी, अच्युत पटवर्द्धन स्कूल राजघाट वाराणसी, आदि की स्थापना कर अपने विचारों को शिक्षा के क्षेत्र में मूर्तरूप दिया। जो आज भी शिक्षा जगत में अपनी महानता कायम किये हुए है।

## निष्कर्ष :-

जे. कृष्णमूति जी प्रसिद्ध एवं क्रान्तिकारी व्यक्तित्व थे। वे इस संसार में अपने मौलिक विचारों के कारण पहचाने जाते हैं। उन्होंने जीवन के प्रति नये दर्शन और दृष्टिकोण का प्रतिपादन किया। उनका कहना है कि, "देखना स्वयं ही अपनी क्रिया को जन्म देता है, सिर्फ ध्यान की एकाग्रता होनी चाहिए।" जे. कृष्णमूर्ति अनुशासन के किसी बंधन में नहीं बन्धना चाहते थे बल्कि पूर्ण स्वतंत्रता को ही ईश्वर की सेवा मानते थे। साथ ही वे हमें ध्यान की एकाग्रता का बहिष्कार करने को कहते है। जे. कृष्णमूर्ति मानवीय प्रेम के उच्चतर स्तर पर पहुंच चुके थे। ओशो रजनीश ने जे. कृष्णमूर्ति जी को एक जागृत प्रबुद्ध पुरूष माना है। जे. कृष्णमूर्ति जी की साधना पद्धति 'अष्टावक्र' के समान थी। जे. कृष्णमूर्ति ने प्रत्यक्ष गुरू के स्थान पर अप्रत्यक्ष गुरू पर बल दिया। वे सम्पूर्ण संसार में मनुष्यों से अतुलनीय प्रेम करते थे। जे. कृष्णमूर्ति जी एक विशिष्ट प्रकार के सत्य को खोजने वाले और उस पर निरन्तर चलने वाले व्यक्तित्व थे। उनके दर्शन की उपयोगिता सदैव अमर रहेगी। उनकी आवाज में, शब्द चयन शैली में, सत्यता का आभास तथा खोज की निरन्तरता हमेशा प्रतीत होती है। उनको सुनने के लिए तथा चर्चाओं में भाग लेने के लिए अपार जन समुदाय उनके पास एकत्रित होता था। उनकी वार्तायें लोकोत्तर अनुभव प्रदान करती हैं, जिनकी तुलना किसी अन्य से करना मुश्किल है। इसीलिए जार्ज बर्नार्ड शॉ ने कहा है- "ऐसा सुंदर मानव पहले मैंने कभी नहीं देखा।"

## भावी अध्ययन हेतु सुझाव :-

१. जे. कृष्णमूर्ति जी के जीवन दर्शन का अन्य विचारकों, विद्वानों के विचारों के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
२. जे. कृष्णमूर्ति जी द्वारा स्थापित शिक्षा केन्द्रों को केस स्टडी बनाकर शोध किया जा सकता है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची


1. कृष्णमूर्ति जे. अन्तिम वार्ताएं, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी, 2003
2. कृष्णमूर्ति जे. आन्तरिक प्रस्फुटन, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी, 2000
3. कृष्णमूर्ति जे. आमूल क्रान्ति की आवश्यकता, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी, 1999
4. कृष्णमूर्ति जे. काल और काल से परे, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी, 1998
5. कृष्णमूर्ति जे. गरुड़ की उड़ान, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी, 2003
6. कृष्णमूर्ति जे. जीवन की पुस्तक, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी, 2000
7. कृष्णमूर्ति जे. ध्यान, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी, 2004
8. कृष्णमूर्ति जे. ध्यान में मन, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी, 2002
9. कृष्णमूर्ति जे. परम्परा जिसमें अपनी, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी, 2000
10. कृष्णमूर्ति जे. युद्ध और शान्ति, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी, 2001
11. कृष्णमूर्ति जे. प्रेम स्वयं से एक संलाप, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी, 2000
12. कृष्णमूर्ति जे. मानवता का भविष्य, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी, 2004
13. कृष्णमूर्ति जे. वाशिंगटन वार्ताएं, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी, 2000
14. लाल रमन बिहारी. भारतीय शिक्षा का विकास एवं उसकी समस्याएं, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ, 2007
15. लटयंस मेरी दि लाइफ एण्ड डेथ ऑफ कृष्णमूर्ति, अनुवादक मुकेश गुप्ता, राजपाल एण्ड सन्ज़ मदरसा रोड, कश्मीरी गेट-दिल्ली,2018

पत्र–पत्रिकाएँ, सर्वेक्षण, रिपोर्ट, शोध ग्रन्थ
1. परिसंवाद जे. कृष्णमूर्ति. जन्मशती विशेषांक, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी
2. परिसंवाद अंक 63.64 कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी
3.परिसंवाद अंक (जनवरी–मार्च 2005). कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी
4.परिसंवाद अंक (जुलाई–सितम्बर 2005). कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी
5. परिसंवाद अंक (दिसम्बर 2006). कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी
6. परिसंवाद अंक (सितम्बर 2007). कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी

सत्यप्रकाश तिवारी
शोधकर्त्ता, शिक्षा , राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

LBP PUBLICATION